1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स नो वसून्याभर। अथर्ववेद 6/63/4
वह परमेश्वर हमें धन धान्य प्राप्त कराए।
O Lord ! Bestow upon us wealth & Prosperity.

वर्ष 38, अंक 35 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 13 जुलाई, 2015 से रविवार 19 जुलाई, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

2020 सशक्त भारत या खोखला भारत?

भारतीय युवाओं को नशे की लत लगाने में विदेशी ताकतों का हाथ

आर्य समाज इन ताकतों को नष्ट करके रहेगा

बड़े शहरों में धनाढ्य वर्ग में सुखी सम्पन्न जिन्दगी का अर्थ कीमती गाड़ी, नशा व रेव पार्टी रह गया है। राष्ट्रीय राजधानी (दिल्ली) एनसीआर क्षेत्र, पंजाब मुम्बई, बैंगलोर जैसे शहर नशे के बड़े केन्द्र बनते जा रहे हैं। खतरनाक बात तो यह है कि प्रतिष्ठित कॉलेजों, शैक्षिक संस्थानों, होटलों में नशे के इन विदेशी सौदागरों ने अपनी मजबूत पकड़ बना ली है। भारत के लिये नशे का सामान सप्लाई करने वाले प्रमुख देशों को देखें तो चीन सोशल साईटों के माध्यम से युवाओं को नशीले उत्पाद मुहैया करा रहा है। लेकिन आर्य समाज दुश्मन देशों के ये मंसूबे सच नहीं होने देगा। आइये नशे के खिलाफ जंग में हम सब एक होकर इस जंग में भागीदार बनकर युवा भारत को एक सशक्त भारत बनने का संदेश दें। **-सम्पादक**

यह कोई भय नहीं अपितु एक सच्चाई है जिसे यदि आज नकारा गया तो हम और हमारा युवा देश उस अंधकार में विलीन हो जाएगा जहां से पुनः निकल पाना असम्भव हो जायेगा। लार्ड मैकाले के अनुसार किसी देश को बिना लड़े बरबाद करना हो तो उस देश के बचपन और युवा पीढी को बुरी लतों में डाल दो तो आने वाले समय में उस देश का अस्तित्व खुद ही समाप्त हो जायेगा। मैकाले की बात को हमारे पड़ोसी मुल्कों ने अमल किया जिसका नतीजा यह हुआ, कि आज भारत का अधिकतर युवा नशे की लत के कारण खोखला होता जा रहा है। इस समय भारत दुनिया का सबसे युवा देश माना जाता है। दुनियाभर के सबसे ज्यादा युवा भारत में निवास करते हैं और इन युवाओं के बलबूते ही भारत 2020 तक दुनियां की आर्थिक महाशक्ति बनना चाहता है। मगर युवाओं में जिस तरीके से सूचना प्रौद्योगिकी का चलन बढ़ा उसी तरीके से एक बहुत बड़ा तबका नशे की चपेट में आता जा रहा है। अफीम, गांजा, चरस, स्मैक, हीरोइन, कोकीन व अन्य खतरनाक नशीले पदार्थ युवाओं के बीच लोकप्रियता हासिल कर रहे हैं। उसे देखकर तो सहज ही प्रतीत होता है कि आने वाला वक्त भारत के आर्थिक और सामाजिक ढ़ांचे को ध्वस्त कर सकता है। राष्ट्रीय राजधानी (दिल्ली) एनसीआर क्षेत्र, पंजाब मुम्बई, बैंगलोर जैसे शहर नशे के बड़े केन्द्र बनते जा रहे हैं। खतरनाक बात तो ये है कि प्रतिष्ठित कॉलेजों, शैक्षिक संस्थानों, होटलों में नशे के इन विदेशी सौदागरों ने अपनी मजबूत पकड़ बना ली है। भारत के लिये नशे का सामान सप्लाई करने वाले प्रमुख देशों को देखें तो जहां चीन सोशल साईटों के माध्यम से युवाओं को नशीले उत्पाद मुहैया करा रहा है। वहीं पाकिस्तान के ये ड्रग्स माफिया जम्मू के रास्ते फलों की टोकरियों में रखकर या सीमावर्ती इलाकों में गरीब किसानों के जरिये पंजाब के रास्ते पूरे देश में ड्रग्स की सप्लाई करता है।

जिस पंजाब के युवा नौजवानों की भारतीय सेना में ही नहीं अपितु उसके कद काठी, उसके आहार-व्यवहार व स्वास्थ्य की चर्चा पूरे देश में होती थी आज वे गबरू जवान नशे के सागर में इस कदर डूब चुके हैं कि पंजाब में लड़कियों की शादी के लिये ऐसा लड़का ढूँढना मुश्किल हो रहा है जो नशे का आदी न हो। परिवार के परिवार नशे के कारण बरबादी के ढेर पर बैठकर स्वाह हो रहे हैं और सबसे दुखद पहलू यह है कि कुछ पंजाबी नौजवान ही मादक पदार्थों की तस्करी में शामिल बताए जाते हैं, दूसरे पहलू को देखें तो पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नाइजीरिया से ये नशीली खेप भारत की मैट्रो पॉलिटिन सिटी तक पहुंचती है। इसके बाद कानफोड़ संगीत के बीच नशे का सेवन कर लड़खड़ाने का अवसर अगर मेट्रो सिटी के धनाढ्य युवाओं को न मिल पा रहा हो तो समझो जीवन बेकार! बड़े शहरों में धनाढ्य वर्ग में सुखी सम्पन्न जिन्दगी का अर्थ कीमती गाड़ी, नशा व रेव पार्टी रह गया है। पिछले दिनों यह सुनकर बड़ा अजीब लगा कि इस घातक नशे में कोबरा सांप का जहर भी शामिल है जो रेव पार्टियों में 72 के और 76 के नाम से बिकता है और इन पार्टियों में सबसे ज्यादा मांग भी कोबरा जहर की रहती है। अब सवाल उठता है, क्या इस अमीर वर्ग के लिये जीने का अर्थ गाड़ी और नशे के अलावा कुछ नहीं? इनके लिये देश, धर्म, रिश्ते, भावनाएं, संवेदना जैसी बातों के कोई मायने नहीं रह गये हैं। अपनी वैदिक आर्य परम्परा संस्कृति की बात करना तो दूर धर्म का नाम लेने पर भी इन्हें अपने कान में जहर पड़ता महसूस होता है। इस मामले पर जनसहयोग के माध्यम से आर्य समाज एक जन-जागरण आन्दोलन चलाने जा रहा है। क्योंकि ये सब कानून से नहीं रोका जा सकता इसे रोकने के लिये शिक्षा पद्धति में परिवर्तन कर सामाजिक स्तर पर व्यापक अभियान की आवश्कता है। इसमें जितनी ही देर की जायेगी हालात उतने ही भयावह होते जायेंगे और दुश्मन देशों का यह सपना पूरा होने में देर न लगेगी लेकिन आर्य समाज दुश्मन देशों के ये मंसूबे सच नहीं होने देगा। आइये नशे के खिलाफ जंग में हम सब एक होकर इस जंग में भागीदार बनकर युवा भारत को एक सशक्त भारत बनने का संदेश दें।

-राजीव चौधरी

आर्य ऐसे होते हैं

दारानगर के मेले पर आर्य लोग प्रचार-शिविर लगाया करते थे। उस प्रचार-शिविर में एक पूज्य आर्य विद्वान् कुर्सी पर बैठे हुए थे। सब आर्य श्रद्धा से उन्हें नमस्ते कर रहे थे। एक नन्हा बालक दौड़ता हुआ आया, उसने श्रद्धापूर्वक कहा-''पंडित जी नमस्ते।'' उन दिनों तो आर्यों को नमस्ते का भी मूल्य चुकाना पड़ता था। बालक से नमस्ते सुनकर पंडित जी भावविभोर हो गये। उस बालक को प्रोत्साहन देने के लिए पंडित जी ने उसकी हथेली पर एक पैसा रख दिया। थोड़ी देर के पश्चात् बालक फिर दौड़ता हुआ आया और कुछ कहे बिना वह पैसा पंडित जी की कुर्सी पर रख कर चला गया या यूं कहिए कि बालक पैसा लौटा गया। पंडित जी ने पास बैठे आर्यों से कहा -'क्या बात है, इस बालक को मैंने पुरस्कार स्वरूप यह पैसा दिया था। यह लौटा क्यों गया है।' आर्य पुरुषों ने कहा -'यह बच्चा महाशय बहाल सिंह का है। वह पैसा ग्रहण नहीं करेगा।' उन्होंने बहाल सिंह का नाम इस ढंग से लिया कि पंडित जी समझे कि बहाल सिंह कोई साधारण पुरुष नहीं हैं। पंडितजी ने पूछा-''बहाल सिंहजी कौन हैं?'' तब उन्हें बताया गया कि बहाल सिंहजी पुलिस विभाग में हैं और रात में चौकीदारी की ड्यूटी निभाते हैं। ये वही बहाल सिंह थे जो यह आवाज़ लगाया करते थे-

''पांच हजार साल से सोने वालो!! जागो''

इन्हीं बहाल सिंहजी ने बिजनौर क्षेत्र में पांच आर्य समाजों की स्थापना की। मथुरा की ऋषि जन्मशताब्दी व अजमेर की अर्ध-निर्वाण शताब्दी पर महात्मा नारायण स्वामी ने आर्यों के नाम सन्देश देते हुए दोनों बार अपने लेखों में बहाल सिंहजी की चर्चा की थी। इससे पाठक समझ लें कि बहाल सिंहजी किस लगन के व्यक्ति थे। ऊपर जिस विद्वान पंडित जी का उल्लेख है वह थे लेखनी सम्राट श्री पंडित गंगा प्रसादजी उपाध्याय। उपाध्यायजी ने अपने एक महत्त्वपूर्ण लेख में बहाल सिंहजी के आर्यत्व पर अपने उद्गार प्रकट किये थे।

-साभार तड़पवाले

परमात्मा हमारा और हम परमात्मा के प्यारे हो जाएं

प्रियो नो अस्तु विश्पतिर्होता मन्द्रो वरेण्यः।
प्रियाः स्वग्नयो वयम्।। -ऋ. 1/26/7 सा.उ. 8/1/1
ऋषिः आजीगर्तिः शुनः शेपः।। देवता-अग्निः।। छन्दः-गायत्री।।

शब्दार्थ- वह विश्पतिः- हम प्रजाओं का स्वामी मन्द्रः-आनन्द देने वाला वरेण्यः -और वरणीय होता-दाता अग्नि नः- हमें प्रियः अस्तु- प्यारा हो जाए तथा -वयम् हम भी स्वग्नयः- उत्तम अग्नियोंवाले होकर प्रियाः- उसके प्यारे हो जाएं।

विनय- हे मनुष्य भाइयो! हम अपने परम आत्मा को, परम अग्नि को भूल गये हैं। हम यह भी भूल गये हैं कि हम स्वयं भी वास्तव में आत्मा-रूप हैं, आत्मग्नि हैं। इसीलिए हम इस संसार की परम तुच्छ धन-सम्पति, पुत्र, वधू, सुख-आराम, शरीर तथा सौन्दर्य आदि विनश्वर वस्तुओं से तो इतना प्रेम करने लग गये हैं, इनमें इतने आसक्त, लिप्त और अनुरक्त हो गये हैं कि हमें इस गन्दी दलदल में से अब उपर उठना असम्भव सा हो गया है, परन्तु जो हमारा असली स्वामी, सखा और सब कुछ है, परम पवित्र प्रभु है, उसे हम दिन-रात के चौबीसों घंटों में से कुछ क्षणों के लिए भी स्मरण नहीं करते। अब तो हम होश संभालें, जागें और अपने परम प्यारे अग्नि-प्रभु को अपना लें। वही हम सब प्रजाओं का एकमात्र पति है, स्वामी है, वही हमें सब सुखों का देने वाला 'मन्द्र' है, वही एकमात्र है जो हम सबका वरणीय है और वही है जो अपने परम यज्ञ द्वारा हम प्रजाओं को सब कुछ दे रहा है। अरे प्यारो! हम उसे छोड़कर कहां प्रेम करने लगे? सचमुच हमने अपनी प्रेमशक्ति का अभी तक घोर दुरुपयोग किया है। क्या प्रेम-जैसी पवित्र वस्तु हमें इन अशुचि, तुच्छ, अनित्य वस्तुओं में रखने के लिए ही दी गई थी? आओ, अब तो हम अपने प्रेम के लक्ष्य को पा लें और उस मन्द्र 'विश्पति' को, वरेण्य 'होता' को अपना प्यारा बना लें, अपना प्रेम उसे समर्पण कर दें।

किन्तु इस प्रकार प्रेमपथ पर चल देने पर हे भाइयों! हमें भी उसे रिझाना होगा, उसे प्रसन्न करना होगा, उसके प्रेम को अपने प्रति आकर्षित करना होगा, अर्थात् हमें भी उसका प्यारा बनना होगा और उसके प्यारे तो हम तभी बन सकते हैं जब हम ''स्वग्नि' बन जाएं, उत्तम प्रकार की आत्माएं बन जाएं, अतः आओ, हम सब मनुष्य अपने उस परम प्यारे के लिए अपनी आत्माओं को शुद्ध करें। उस बृहद् अग्नि के लिए अपनी अग्नियों को उत्तम प्रकार की बना लेवें। अब हमारी आत्माग्नि से विश्वप्रेम की सुन्दर किरणें ही प्रसारित होवें, हमारी बुद्धि-अग्नि में से सत्य की ज्योति ही निकले, हमारी मानसिक अग्नि सर्वकल्याण के उत्तम विचारों में ही प्रकाशित हुआ करे और हमारी चित्ताग्नि से पवित्र इच्छाएं व भावनाएं ही उठें। इस प्रकार हम उत्तम अग्निवाले हो जाएं, क्योंकि इसी प्रकार वह हमारा प्यारा हमसे प्रसन्न होगा। इसी प्रकार हमें अपने प्यारे को रिझाना है।

वैदिक विनय
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।
- विजय आर्य
मो. 09540040339

सम्पादकीय

इफ्तारी की दावत या राज भोज

लोक संस्कृति सिर्फ एक समुदाय की ही क्यों मनाई जा रही है अल्पसंख्यक समुदाय तो जैन, सिख, पारसी इत्यादि भी हैं यदि इन लोगों के लिए ये परम्परा नहीं है तो क्यों न सरकार इसके लिए नई परम्परा बनाए तभी हम कह सकेंगे सबका साथ सबका विकास। बात ईर्ष्या की नहीं है, बात पीड़ा की है, कारण कश्मीर से कन्या कुमारी, राजभवन से संसद भवन तक रोजा-इफ्तार की दावत के साथ अल्लाह-हू अकबर के नारे गूँज रहे हैं कहते हैं भारत लोकतांत्रिक देश है, सर्व धर्म का यहां सम्मान किया जाता है। जब यहां सर्वधर्म का सम्मान होता है तो अन्य समुदायों के त्योहारों की उपेक्षा क्यों? पर आज हमारे राजनेता और कुछ हिन्दू धर्म के तथाकथित रक्षक संघ इन दिनों इफ्तारी दावत में इस तरह लगे हैं जैसे ये इस युग का अन्तिम त्योहार हो! ये उन लोगों को खुश करने में लगे हैं जिन्हें उनके मसीहा भी खुश नहीं कर पाये। गिलानी जैसे लोग जो इस देश में रहकर 15 अगस्त और 26 जनवरी जैसे राष्ट्रीय पर्वो पर भारत के गौरव की शान तिरंगे का अपमान करने में भी नहीं हिचकते हैं, बच्चा-बच्चा जानता है कि दशहरे के पर्व पर पूजा की थाली उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी जी ने यह कह कर वापस कर लौटा दी थी कि मेरा धर्म इसे छूने की गवाही नहीं देता क्योंकि मैं मुसलमान हूँ। इन शब्दों से पता नहीं उन्होंने कैसी मानसिकता का परिचय दिया किन्तु एक गरिमा के पद पर बैठकर ये जता दिया कि हम किसी और के पर्व, उत्सव, त्योहार का कोई सम्मान नहीं कर सकते। संसद के एनेक्सी में आयोजित मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के रोजा इफ्तार दावत में सोलह विदेशी मुस्लिम मुल्कों के राजनयिकों ने शिरकत की यदि उनसे पूछा जाये कि कभी आपके मुल्क में आपकी सरकार ने अल्पसंख्यक हिन्दुओं को होली, दिपावली या नवरात्रों में दावत दी? तो सबका जवाब न में होगा उन विदेशियों की तो बात दूर की रही अपने ही देश में कितने ही मुस्लिम राजनेता हिन्दुओं को उनके त्यौहारो पर बुलाते हैं या उनसे यह पूछा जाये कि कितने राजनेता, उलेमा भारत में ही जहां अल्पसंख्यक हिन्दू है उन्हें उनके त्योहारों में कितनी शुभकामना संदेश और दावतें देते हैं?जो लोग अरब देशों में निकले चांद को देखकर अपना त्योहार मनाते हैं वो लोग भारत में खड़े होकर सूर्य को नमस्कार करने में कतरा जाते हैं जो लोग अपने देश की नदियों और भारत माता को गाली देकर अरब के मुल्कों की संस्कृति व कानून का बखान कर दूसरे देश की नदी के जल से आचमन करना अपनी शोभा मानते हैं, उनको कैसी दावत दी जा रही है, और जो दावत दी जा रही है यह भी स्मरण रहे कि ये करोड़ों लोगों के खून-पसीने की कमाई की है जो ये लोग अपने राजनैतिक लक्ष्य पूरे करने के लिए रोजा-इफ्तारी पर फूंक रहे हैं। पाकिस्तान के एम्बेसी ने हुर्रियत के अलगाव वादी नेताओं को अपने यहां इफ्तारी दावत में बुला रहा है भारत सरकार को इसका कड़ा विरोध करना चाहिए। खैर त्योहार हमारे भी हैं यदि इन लोगों ने हमारी लोक संस्कृति हमारे पर्व, त्योहार का सम्मान किया होता तो शायद ये इफ्तारी दावत का राजभोज हमारे देश के अन्दर पांव ही न पसार पाता।

-सम्पादक

ग्रन्थ परिचय

चतुर्वेद विषय-सूची

प्रश्न 1: क्या महर्षि द्वारा लिखित वेदविषयक कोई अन्य ग्रंथ भी उपलब्ध है?

उत्तर : हां, महर्षि द्वारा लिखित वेदविषयक एक अन्य ग्रन्थ भी उपलब्ध है, जो छोटा (लघु) होते हुए भी बहुत उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण है।

प्रश्न 2: इस ग्रन्थ का क्या नाम है?

उत्तर: इस ग्रन्थ का नाम है-'चतुर्वेद विषय-सूची'।

प्रश्न 3: परन्तु इसका नाम तो सुनने में नहीं आया? (परन्तु यह ग्रन्थ प्रसिद्ध तो नहीं है?)

उत्तर : हां, यह ग्रन्थ अधिक प्रसिद्ध न होते हुए भी बहुत उपयोगी है।

प्रश्न 4 : इसकी क्या उपयोगिता है?

उत्तर : जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट हो रहा है, इस ग्रन्थ में चारों वेदों के सभी मंत्रों के विषय अर्थात् देवता का उल्लेख किया गया है।

प्रश्न 5: सच में ही यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी ग्रन्थ है। चारों वेदों के सभी मन्त्रों के देवता अथवा विषय का उल्लेख करना अपने आप में बहुत जटिल कार्य है, परन्तु इस ग्रन्थ की प्रामाणिकता कहां तक सत्य है?

उत्तर: जटिल एवं महत्त्वपूर्ण कार्य होते हुए भी यह ग्रंथ पूर्णतः प्रामाणिक है। क्योंकि इस ग्रन्थ का मूल आलेख स्वयं महर्षि दयानन्द द्वारा संशोधित एवं परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा संरक्षित है। इसके प्रूफ का संशोधन आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् भवानीलाल जी भारतीय द्वारा ही किया गया है। सन् 1935 ई. में पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने नवम्बर - दिसम्बर के महीने में इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी। उनके अनुसार, यह ग्रंथ सफेद फुलस्केप कागज पर लिखा हुआ है। इसमें 56 पृष्ठ हैं।

प्रश्न 6 : इस ग्रन्थ का रचना-काल क्या है?

उत्तर : प्रत्यक्ष प्रमाण न मिलने से इसका निश्चय करना कठिन है। हां, इतना अवश्य है कि इसकी रचना ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका की रचना से पूर्व हो चुकी थी।

प्रश्न 7: इसका प्रथम बार प्रकाशन कब और कहां से हुआ?

उत्तर : इस ग्रन्थ का प्रथम बार प्रकाशन सन् 1971 (विक्रमी संवत् 2028), दयानन्दाबाद 147 में अजमेर, वैदिक यन्त्रालय से ही हुआ था।

प्रश्न 8: क्या चारों वेदों के सभी मन्त्रों के विषयों की सूची एक साथ प्रस्तुत है अथवा पृथक्-पृथक् है?

उत्तर : इस ग्रन्थ में चारों वेदों के मंत्रों के विषयों की सूची एक साथ नहीं, अपितु प्रत्येक वेद के मंत्रों की सूची पृथक्-पृथक प्रस्तुत की गई है। यथा-ऋग्वेद विषय सूची, यजुर्वेद विषय सूची, सामवेद विषय सूची तथा अथर्ववेद विषय सूची। महर्षि के एक स्थान पर ही वेदों के सभी मंत्रों के विषय (देवता) को प्रस्तुत करके सचमुच एक महत्त्वपूर्ण एवं अमूल्य कार्य कर दिया। यह वेदों का अध्ययन एवं वेद के विभिन्न विषयों के अनुसंधानकर्ताओं के लिए सुगम मार्ग-निर्माण के समान ही उपयोगी है।

प्रश्न 9: इन चारों विषय सूची का क्रम क्या है?

उत्तर : चतुर्वेद विषय सूची में क्रम है- ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद और यजुर्वेद विषय सूची। पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी के मत में, 'सम्भवतः यजुर्वेद के साथ कर्मकाण्ड की घनिष्ठता के कारण ऋषि ने इस पर सबसे अन्त में विचार किया हो। अथवा वे इसी क्रम से वेदों का भाष्य रचना चाहते हों।'

साभार: महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय

बोध कथाएं

सहनशीलता का जादू

महर्षि दयानन्द ठहरे थे फर्रुखाबाद में गंगा के तट पर। उनसे थोड़ी ही दूर एक और झोपड़ी में एक दूसरा साधु भी ठहरा हुआ था। प्रतिदिन वह देव दयानन्द की कुटिया के पास आकर उन्हें गालियां देता रहता। देव दयानन्द सुनते और मुस्करा देते। कोई भी उत्तर नहीं देते थे। कई बार उसके भक्तों ने कहा- महाराज! आपकी आज्ञा हो तो इस दुष्ट को सीधा कर दें?

महाराज सदा कहते- नहीं, वह स्वयं ही सीधा हो जायेगा। एक दिन किसी सज्जन ने फलों का एक बहुत बड़ा टोकरा महर्षि के पास भेजा। महर्षि ने टोकरे से बहुत अच्छे-अच्छे फल निकाले, उन्हें एक कपड़े में बांधा और एक व्यक्ति से बोले-ये फल उस साधु को दे आओ, जो उस परली कुटी में रहता है, जो प्रतिदिन यहां आकर कृपा करता है। उसी व्यक्ति ने कहा-परंतु वह तो आपको गालियां देता है?

महर्षि बोले- हां, उसी को दे आओ।

वह सज्जन फल लेकर उस साधु के पास गए। जाकर बोले-साधु बाबा! ये फल स्वामी दयानन्द ने आपके लिए दिये हैं। साधु ने दयानन्द का नाम सुनते ही कहा-अरे यह प्रात: काल किसका नाम ले लिया तूने? पता नहीं, आज भोजन भी मिलेगा या नहीं। चला जा यहां से। मेरे लिए नहीं, किसी दूसरे के लिए भेजे होंगे। मैं तो प्रतिदिन उसे गालियां देता हूं। उस व्यक्ति ने महर्षि के पास आकर यही बात कही।

महर्षि बोले-नहीं, तुम फिर उसके पास जाओ। उसे कहो कि आप प्रतिदिन जो अमृत वर्षा करते हो,उसमें आपकी पर्याप्त शक्ति लगती है। ये फल इसलिए भेजे हैं कि इन्हें खाइये, इनका रस पीजिये, जिससे आपकी शक्ति बनी रहे और आपकी अमृत-वर्षा में न्यूनता न आ जाए।'' उस व्यक्ति ने साधु के पास जाकर वही बात कह दी-''सन्त जी महाराज! यह फल स्वामी दयानन्द ने आप ही के लिए भेजे हैं और कहा है कि आप प्रतिदिन जो अमृत-वर्षा उन पर करते हैं, उसमे आपकी पर्याप्त शक्ति व्यय होती है। इन फलों का प्रयोग कीजिये, जिससे आपकी शक्ति बनी रहे और आपकी अमृत-वर्षा में न्यूनता न आए।'' साधु ने यह सुना तो घड़ों पानी उसके ऊपर पड़ गया। निकला अपनी कुटिया से दौड़ता हुआ पहुंचा महर्षि के पास। उनके चरणों में गिर पड़ा बोला-महाराज! मुझे क्षमा करो। मैंने आपको मनुष्य समझा था, आप तो देवता हैं। यह है सहनशीलता का जादू। जिसमें यह सहनशीलता उत्पन्न हो जाती है, उसके जीवन में एक अनोखी मिठास, एक अद्भुत सन्तोष और एक विचित्र प्रकाश आ जाता है।

पुस्तक समीक्षा

प्राध्यापक श्री राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी की नई पुस्तक

''इतिहास प्रदूषण'' ''मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।'' (यजुर्वेद 36.18)

लेखक - प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' (अबोहर -पंजाब)

कुल पृष्ठ -160

प्रकाशक -'पण्डित लेखराम वैदिक मिशन' अकोला (महाराष्ट्र)

मूल्य -100 रु.

इस पुस्तक में अनुभवी लेखक ने आर्य समाज के कई लेखकों (प्रमुख रूप से आर्य समाज के अग्रिम पंक्ति के लेखक डॉ. भवानीलाल भारतीय जी) की उन बातों की आलोचना की है जो उनकी दृष्टि में इतिहास विरुद्ध व अनुचित है। आर्य जगत लेखक की 'तड़प-झड़प' वाली शैली से सुपरिचित है। यह पुस्तक भी उसी शैली में लिखी गयी है। लेखक वयोवृद्ध हैं। जीवन के इस पड़ाव में अपनी इस स्वाभाविक शैली का त्याग करना अब सम्भवत: उनके लिये भी दुष्कर होगा। अन्यथा अपने ही संगठन के समानधर्मी प्रतिष्ठित लेखकों की पुस्तकों में पाई जाने वाली इन अशुद्धियों एवं विसंगतताओं की वे शालीन व संयत भाषा में समालोचना करते तो श्रेयस्कर रहता। संगठन की दृष्टि से भी यही अपेक्षित है कि जहां तक सम्भव हो हम अपनी बात प्रीतिपूर्वक प्रस्तुत करें।

लेखक ने पुस्तक लिखने का प्रयोजन आर्य समाज के क्षेत्र में हो रहे इतिहास के प्रदूषण को रोकना बताया है। यह प्रयोजन नि:सन्देह उत्तम व पवित्र है और लेखक की एतद् विषयक चिन्ता भी उचित है। फिर भी एक पाठक के रूप में मुझे लगता है कि कई स्थानों पर लेखक आलोच्य विषय के बहाने किसी व्यक्ति-विशेष पर अनावश्यक चोट करने के प्रवेग में बहकर अतिरेक भी कर गये हैं।

प्रा. जिज्ञासु जी की इस पुस्तक में मुख्य रूप से डॉ. भारतीय जी के लेखन को ही लक्ष्य बनाया गया है। अत: इसका प्रत्युत्तर लिखने के लिये डॉ. भारतीय जी ही सर्वाधिक उपयुक्त व्यक्ति हैं। मगर मैं नहीं जानता कि वर्तमान में अपनी वृद्धावस्था में वे लेखनादि करने में सक्षम हैं या नहीं।

इतना तो है कि प्रा. जिज्ञासु जी की यह पुस्तक हमें लेखन व प्रवचनादि कार्यो में अधिक सावधान रहने की, अपनी बात यथासम्भव प्रमाण-पुरस्सर लिखने-कहने की आवश्यकता का बोध कराने वाली है। तिलमिलाने की अपेक्षा यही उत्तम है कि इस पुस्तक से हम कुछ सीखें और अपने आर्य समाज रूपी संगठन को उसके महान् प्रवर्त्तक की अपेक्षा अनुसार प्रखर, ज्ञान-प्रवर्त्तक, सत्याग्रही, प्रगतिशील, उदार व सक्रिय बनाएं।

लेखक की इस कृति को पढ़कर उसके विषय में अपनी धारणा बनाने में प्रत्येक पाठक पूर्ण स्वतन्त्र हैं।

समीक्षक -भावेश मेरजा

उत्तम गुणों से मिलती है सच्ची लोक प्रियता

जिसका स्वभाव मधुर है जो क्रोध के कारण भी शान्त व सन्तुलित रहता है और छोटे से छोटे व्यक्ति को भी प्रसन्नता से मिलता है और किसी से भी निन्दा व चुगली का स्वभाव नहीं बनाता है और सदैव दूसरों में गुण ही ढूंढता है यह संसार उसे लोकप्रिय बना देता है। ईश्वर का स्वभाव जीवों पर दया करना है और जीवों के गुण क्रमानुसार उसका फल भी प्रदान करना है वह किसी का पक्षपात नहीं करता है। न्याय करता है। इसी प्रकार जो मनुष्य ईश्वर के गुण क्रमानुसार संसार में लोगों में व्यवहार करता है और सदैव सबका कल्याण ही करता है, वही लोकप्रियता प्राप्त करता है, वह ही धार्मिक है....

सच्ची लोक प्रियता जीवन की सफलता का एक प्रमाणिक मापदण्ड है। प्राय: धन दौलत, परिवार, प्रतिष्ठा आदि जीवन की सफलता का चिन्ह मानते हैं। ये बातें सामान्य संतोष वाली हो सकती हैं, किन्तु इन्हें जीवन की सफलता का प्रामाणिक लक्षण नहीं कहा जा सकता। धनवान लोग समझते हैं कि समाज में गोष्ठियों में उन्हें विशेष स्थान दिया जाता है, किन्तु यह तभी तक है जब तक उनके पास वैभव है, वैभव समाप्त होते ही संसार उन्हें भूल जाता है।

भगवान राम से लेकर आज तक जिन महापुरुषों की लोक प्रियता लाखों वर्षो से बनी है उसके पीछे उनके देवत्व परोपकारी व ईश्वरी गुणों के अनुकूल संसार का मार्ग दर्शन किया और स्वयं उत्तम आदर्श संस्कारिक व सृष्टि कर्मानुसार जीवन के कार्य करके संसार को सत्य मार्ग पर चलने का मार्ग दिखाया। संसार उन्हीं के गुणों को याद करता है।

लोकप्रियता तीन प्रकार की होती है-

1. आर्ष आध्यात्मिक लोकप्रियता,
2. सांस्कारिक आर्ष लोकप्रियता,
3. सामाजिक आर्ष अनार्ष लोक प्रियता

आइये इन पर विचार करते हैं-

आज से ही नहीं सदा से पृथ्वी पर पुत्रेषणा, वित्तेषणा लोकेष्णा का राज्य रहा है। भगवान राम से लेकर महर्षि दयानन्द काल तक सबने पुत्रेषणा लोकेषणाओं के और वितेषणाओं के लिये कर्म किये और जीवन भर उन्हीं ऐषणाओं को पूरा करने में लगे रहे। विचार करने से प्रतीत होता है कि संसार के महापुरुष किसी न किसी ऐषणा के लिए जिये या मरे। किन्तु इस धरती पर एक ऐसे महापुरुष का जन्म हुआ, जिनका पूज्यनाम महर्षि दयानन्द सरस्वती था। देखो उत्तम मनुष्य होने के कारण श्रीराम, श्री कृष्ण जीवन भर सत्य के किसी भी ऐषणाओं के लिये लड़ते रहे, क्योंकि देवता उसे कहते हैं जो किसी से बदला न ले, अपने अहित करने वालों को भी क्षमा कर देवें। विचार करें महर्षि दयानन्द बिना किसी भी संसारिक ऐषणाओं के ऋत: सत्य के लिए लड़े व मरे और अपने को विष देने वाले को भी कुछ रुपये देकर भगा दिया। कहा भाग जाओ, अन्यथा मेरे समर्थक तुम्हारा अहित कर देंगे। महर्षि दयानन्द जी ने ईश्वरीय सत्य को जन-जन तक पहुंचाया जो संसार में महाभारत काल के बाद आज तक किसी ने नहीं किया, इसीलिये जब तक सृष्टि रहेगी महर्षि दयानन्द जी की लोकप्रियता बढ़ती रहेगी। उक्त विचार आर्षलोकप्रियता के थे।

आइये अब अनार्ष लोकप्रियता पर विचार करते हैं। दान दक्षिणा देना या अन्य प्रकार के उदारता के कार्य करना नि:सन्देह अच्छी बात है,किन्तु यह परमार्थ या परोपकार तब व्यापार बन जाता है जब लोग लोकप्रियता के रूप में उसका लाभ उठाना चाहते हैं। इस प्रकार की मन्तव्यपूर्ण उदारता लोकप्रियता का कारण तो नहीं बनती, किन्तु परमार्थ एवं परोपकार के पुण्य से वंचित रह जाती है। जीवन तभी सफल माना जा सकता है जब औरों के लिये भी संवेदना और सहानुभूति वाला हो। प्राय: लोग समझते हैं कि उनके पास बड़ा परिवार व सम्पत्ति है वह सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं, किन्तु यह विचार भी भ्रामक है, क्योंकि व्यक्ति में घमण्ड दम्भ, प्रदर्शन, द्वेष स्पर्धा एवं ईर्ष्या की बुराई आ जाती है और वह अपनी भक्ति को इन्हीं में व्यय करने लगता है।

जीवन की वास्तविकता लोकप्रियता पाने के लिए आवश्यक है। देवीय गुणों का स्वभाव में श्रेष्ठ होना। बिना उच्च गुण के मनुष्य सम्पन्न होने पर भी लोकप्रियता प्राप्त नहीं कर सकता है। एक निर्धन एक धनाड्य की अपेक्षा अपने उत्तम गुणों से उच्च लोकप्रियता प्राप्त कर सकता है। वास्तव में अपने अन्दर परोपकारी गुणों का विकास करना ही सच्ची लोकप्रियता का मार्ग है। श्रेष्ठ कर्मो की श्रेष्ठता एवं निष्कलंकता में आस्था रखने वाला मनुष्य बड़े से बड़ा कष्ट उठाकर भी किसी को धोखा नहीं देता और वह कोई भी ऐसा कार्य नहीं करेगा जिससे वह और उसका परिवार, समाज व राष्ट्र या मानवता लांछित होती हो।

जिसका स्वभाव मधुर है जो क्रोध के कारण भी शान्त व सन्तुलित रहता है और छोटे से छोटे व्यक्ति को भी प्रसन्नता से मिलता है और किसी से भी निन्दा व चुगली का स्वभाव नहीं बनाता है और सदैव दूसरों में गुण ही ढूंढता है यह संसार उसे लोकप्रिय बना देता है। ईश्वर का स्वभाव जीवों पर दया करना है और जीवों के गुण क्रमानुसार उसका फल भी प्रदान करना है वह किसी का पक्षपात नहीं करता है। न्याय करता है। इसी प्रकार जो मनुष्य ईश्वर के गुण क्रमानुसार संसार में लोगों में व्यवहार करता है

...शेष पेज 5 पर

गुरुकुल कांगरी विश्वविद्यालय के असिटेंट प्रोफेसर डॉ. विपिन द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस मे शोध पत्र पढ़े जाने पर बधाई

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के फार्मास्यूटिकल साइंस विभाग में कार्यरत असिटेंट प्रोफेसर डॉ. विपिन कुमार ने अपना शोध पत्र न्यूयार्क की स्टोनी ब्रूक यूनिवर्सिटी में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस में प्रस्तुत किया। इन्होंने डायबिटीज रोग में काम आने वाली एलोपेथिक दवाओं की नोवेल formulations की उपलब्धियों के बारे में अपना शोधपत्र पढ़ा। इस शोध पत्र में नेचुरल पालिमर्स के अत्याधुनिक उपयोगों एवं डायबिटीज रोग के निदान हेतु नई formulations के बनाने में इन पालिमर्स के योगदान के बारे में बताया गया है। यह कांफ्रेंस 29 जून से 3 जुलाई तक स्टोनी ब्रूक यूनिवर्सिटी में आयोजित की गयी। यह यूनिवर्सिटी 2015 की यू. एस. न्यूज एवं वर्ल्ड रिपोर्ट के अनुसार 88वीं रैंक पर आती है । इस कांफ्रेंस में विश्व के 75 देशों के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया तथा नोबेल विजेताओं प्रो. हिगर एवं प्रो. रोबर्ट होवार्ड गृब्ब ने भी अपनी शोध कार्यों से इस कांफ्रेंस में पधारे प्रतिभागियों को अवगत कराया। डॉ. विपिन ने बताया कि इस कांफ्रेंस में हुए वैज्ञानिक विचार मंथन से फार्मास्यूटिकल साइंस विभाग में होने वाले शोध कार्य को नई दिशा प्रदान करने मे मदद मिलेगी एवं भविष्य में विभाग का विश्व की अन्य यूनिवर्सिटीज से कोलैबोरेशन करने में सहयोग प्राप्त होगा।

डॉ. विपिन कुमार के शोध कार्य को इस अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस में प्रस्तुत करने हेतु भारत सरकार के विज्ञान एवं तकनीकी विभाग की किशोर वैज्ञानिक इंटरनेशनल ट्रेवल स्कीम के अंतर्गत वित्तीय सहायता प्रदान की गयी। गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के असिटेंट प्रोफेसर डॉ. विपिन द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस मे शोध पत्र पढ़े जाने पर विश्वविद्यालय के कुलपति एवं कुलसचिव जी ने बधाई दी।

आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर में योग सप्ताह सम्पन्न

अपनी भावी पीढ़ी के जीवन में योग के महत्व को देखते हुए आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर ने समिति द्वारा संचालित समस्त विद्यालयों में 3 से 10 जुलाई 2015 तक योग सप्ताह का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ गायत्री मंत्र के साथ हुआ व 10 जुलाई को प्रातः वैदिक विद्या मंदिर, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में योग सप्ताह का समापन श्री जगदीश प्रसाद गुप्त प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति की अध्यक्षता में हुआ। योग सप्ताह में मोरारजी देसाई राष्ट्रीय इंस्टीट्यूट ऑफ योगा, नई दिल्ली से प्रशिक्षित सुश्री दीपाली रेसवाल द्वारा आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर द्वारा संचालित विद्यालयों के लगभग 4000 छात्राओं एवं शिक्षकों को आठ दिनों तक ग्रीवाशक्ति विकासक क्रिया, कटिशक्ति विकास क्रिया, घुटना संचालक क्रिया, ताड़ासन, वृक्षासन, पादहस्तासन, त्रिकोणासन, अर्द्ध चक्रासन, दण्डासन, व्रजासन, अर्द्ध उष्ट्रासन, शंशाकासन, कपालभाती, अनुलोम- विलोम/नाड़िशोधन, प्राणायाम, ओ३म् ध्वनि आदि का प्रशिक्षण दिया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए समिति प्रधान, जगदीश प्रसाद गुप्ता ने छात्राओं को सम्बोधित करते हुए योग के महत्व पर प्रकाश डाला एवं मंत्री प्रदीप आर्य ने सभी का धन्यवाद किया। आर्य वीरों को आसन, प्राणयाम, कुंग-फू, कराटे, सर्वागसुन्दर व्यायाम, सूर्यनमस्कार एवं विभिन्न खेल खिलाए गये। ईश्वर जीव प्रकृति, ब्रहद सृष्टि रचना, पंचमहायज्ञ, 16 संस्कार, वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था की जानकारी सरल ढंग से दी गयी।

आर्य समाज खेड़ा अफ़गान का योग शिविर सम्पन्न

आर्य समाज खेड़ा अफ़गान में 21 जून योग दिवस पर योग शिविर का आयोजन किया गया। आचार्य रणवीर शास्त्री ने योगासनों एवं प्राणायाम का अभ्यास कराने के पश्चात् युवाओं को महर्षि पतंजलि के योग दर्शन का स्वरूप समझाया तथा आधुनिक योगासनों का विशिष्ट लाभ बताया। सभा प्रधान श्री आदित्य प्रकाश गुप्त ने योग के महत्त्व पर प्रकाश डाला। वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास की ओर से विद्यार्थियों को दयानन्द जीवन दर्पण पुस्तक तथा आर्य जगत् साप्ताहिक का एक वर्ष का चन्दा देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर नितिन आर्य सुमित, आर्यमन आर्य, सचिन, विकास कुमार, यशपाल, राजेश कुमार, शशिकांत गुप्त वेद, भूषण गुप्त, पूनम गुप्त व बड़ी संख्या में युवाओं ने भाग लिया।

–मन्त्री

मां सत्यप्रिया यति एवं महात्मा चैतन्यमुनि जी सम्मानित

हिमाचल प्रदेश सोलन में डी.ए.वी. प्रबन्धक समिति के तत्त्वावधान में भव्य समारोह आयोजित किया गया जिसमें मां सत्य प्रियायति जी एवं महात्मा चैतन्य मुनि जी के साथ-साथ अन्य विद्वानों को भी सम्मानित किया गया। सम्मेलन पूज्य महात्माजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ तथा मुख्य अतिथि समिति के अध्यक्ष श्री पूनम सूरीजी थे। देश भर से आये हजारों डी.ए.वी. संस्थान से जुड़े व्यक्तियों ने समारोह को सार्थकता एवं भव्यता प्रदान की। उल्लेखनीय है कि पूज्य माताजी और महात्माजी अपने आवासीय शिविरों में मनोवैज्ञानिक व तार्किक ढंग से अत्यधिक परिश्रम करके सार्वभैमिक वैदिक-विचारधारा की चेतना शिविरार्थियों में स्थापित करते थे उसका स्मरण करके आज भी डी.ए.वी. के शिविरार्थी आयोजक एवं अधिकारीगण अत्यधिक प्रफुल्लित होते हैं।

–प्रबन्धक

पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज संभाजीनगर (औरंगाबाद) महाराष्ट्र की ओर से खडकेश्वर महादेव मंदिर के प्रांगण में 16 जून से 22 जून तक महायज्ञ का आयोजन किया गया। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के श्री उग्रसेनजी राठोडद (परली), मा. जय किशोर डौडीया मा. प्रधान. महाराष्ट्र विधान सभा के अध्यक्ष मा. श्री हरिभाऊजी बागडे ने गौपूजन व अश्व पूजन के बाद यज्ञ में आहुतियां डालीं। मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्रजी फडनवीसजी ने अपनी शुभेच्छा भेजी। भा.ज.पा. प्रान्त अध्यक्ष श्री राव साहेब दानवेजी ने दूरभाष से अपनी शुभकामनाएं दीं। यज्ञ समापन पर सभी मान्यवरों ने आशीर्वाद संबोधन किया।

–दयाराम राजाराम बसैये

आर्यसमाज की महान विभूति- डॉ. भवानी लाल भारतीय

डॉ. भवानीलाल भारतीय आर्य जगत की महान विभूति हैं जिनका सम्पूर्ण जीवन साहित्य सेवा द्वारा ऋषि के ऋण से उऋण होने के लिए प्रयासरत रहा। डॉ. भवानीलाल भारतीय जी ने जिन ग्रंथों की रचना की आइए उन पर एक दृष्टिपात करें - **सम्पादक**

स्वामी दयानंद जी की वैदिक विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने में हजारों आर्यों ने अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार योगदान दिया। साहित्य सेवा द्वारा श्रम करने वालों ने पंडित लेखराम जी की अंतिम इच्छा को पूरा करने का भरपूर प्रयास किया। डॉ. भवानीलाल भारतीय आर्य जगत की महान विभूति हैं जिनका सम्पूर्ण जीवन साहित्य सेवा द्वारा ऋषि के ऋण से उऋण होने के लिए प्रयासरत रहा। राजस्थान के नागौर जिले के परबतसर ग्राम में 1 मई 1928 को भारतीय जी का जन्म हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् आपने अध्यापन करते हुए हिन्दी एवं संस्कृत दो भाषाओं में एम. ए किया। कालांतर में आपने आर्यसमाज की संस्कृत भाषा को देन विषय पर शोध प्रबंध लिखा जिसे पंडित भगवत दत्त सरीखे मनीषी द्वारा सराहा गया। आप आर्यसमाज पाली, अजमेर के प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, परोपकारिणी सभा, सार्वदेशिक सभा के अधिकारी भी रहे। आप स्वामी दयानंद चेयर, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़ के अध्यक्ष पद से सेवा निवृत हुए।

डॉ. भारतीय जी का लेखन-

१. तुलनात्मक अध्ययन विषयक ग्रन्थ

ऋषि दयानंद और अन्य भारतीय धर्माचार्य, महर्षि दयानंद और राजा राममोहन राय, आधुनिक धर्म सुधारक और मूर्तिपूजा, महर्षि दयानंद और स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद और ईसाई मत

२. वेद विषयक ग्रन्थ

वेदों में क्या हैं?, वेदाध्ययन के सोपान, उपनिषदों की कथाएं भाग १, ऋग्वेद-यजुर्वेद-सामवेद एवं अथर्ववेद परिचय, वेदों की अध्यात्मधारा, वैदिक कथाओं का सच, उपनिषदों की अध्यात्म धारा,ऋग्वेद-यजुर्वेद-सामवेद एवं अथर्ववेद अध्यात्म शतक,

३. ऋषि दयानंद विषयक ग्रन्थ

महर्षि दयानंद का राष्ट्रवाद, ऋषि दयानंद और आर्यसमाज की संस्कृत भाषा और साहित्य को देन, महर्षि दयानंद श्रृद्धांजलि, महर्षि दयानंद प्रशस्ति, ऋषि दयानंद के ऐतिहासिक संस्मरण, स्वामी दयानंद के दार्शनिक सिद्धांत, दयानंद साहित्य सर्वस्व, महर्षि दयानंद प्रशस्ति काव्य, मैंने ऋषि दयानंद को देखा, ऋषि दयानंद की खरी-खरी बातें, ऋषि दयानंद के चार लघु चरित, दयानंद चित्रावली (अंग्रेजी में) swami dayanand saraswati his life and ideas & shiv nandan kulyar]

४. महापुरुषों के जीवनचरित

श्रीकृष्ण चरित, पंडित गणपति शर्मा, स्वामी दर्शनानन्द, महात्मा कालूराम जी, कुंवर चाँद करण शारदा, नवजागरण के पुरोधा -स्वामी दयानंद, पंडित श्याम जी कृष्ण वर्मा, ऋषि दयानंद के भक्त, प्रशंसक और सत्संगी, श्रद्धानन्द जीवनकथा, राजस्थान के आर्य महापुरुष

५. आर्यसमाज विषयक ग्रन्थ

आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी, आर्यसमाज के वेद सेवक विद्वान, परोपकारिणी सभा का इतिहास, आर्यसमाज का अतीत और वर्तमान, आर्यसमाज के पत्र और पत्रकार, आर्यसमाज विषयक साहित्य परिचय, आर्यसमाज का इतिहास-पांच खण्ड का विवेचन, आर्यसमाज के बीस बलिदानी,

६. स्वामी दयानंद के ग्रंथों का सम्पादन

चतुर्वेद विषय सूची, ऋग्वेद के प्रारंभिक २२ मन्त्रों का भाष्य, दयानंद शास्त्रार्थ संग्रह, दयानंद उवाच, महर्षि दयानंद की आत्मकथा, उपदेश मंजरी, पंडित लेखराम रचित स्वामी दयानंद का जीवनचरित

७. अन्य ग्रन्थ

बालकों की धर्म शिक्षा, पंडित रूद्र दत शर्मा ग्रंथावली भाग १, शुद्ध गीता, दयानंद दिग्विजयार्क, कविरत्न प्रकाश चंद्र अभिनन्दन ग्रन्थ, पंडित महेंद्र प्रताप शास्त्री अभिनन्दन ग्रन्थ, स्वामी भीष्म अभिनन्दन ग्रन्थ, श्रद्धानन्द ग्रंथावाली ९ भाग, ऋषि दयानंद प्रशस्ति, श्री दयानंद चरित

८. विभिन्न ग्रन्थ

विद्यार्थी जीवन का रहस्य, ब्रह्मवैवर्त पुराण की आलोचना, महर्षि दयानंद निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला, आर्य लेखक कोष-१२०० आर्यविद्वानों का लेखन परिचय,

९. सत्यार्थ प्रकाश विषयक ग्रन्थ

ज्ञानदर्शन-एकादश समुल्लास की व्याख्या, विश्व धर्म कोष -सत्यार्थ प्रकाश , हिन्दू धर्म की निर्बलता

१०. अनूदित ग्रन्थ

श्रीमद्भागवत (गुजराती), मीमांसा दर्शन (गुजराती), आर्यसमाज -लाला लाजपत राय (अंग्रेजी), श्रद्धानन्द ग्रंथावली - कांग्रेस एण्ड आर्यसमाज एण्ड इट्स डेट्रेक्टर्स, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी-लाला लाजपत राय का हिंदी अनुवाद, सूरज बुझाने का पाप (गुजराती)

इसके अतिरिक्त आर्यसमाज की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में 1000 के करीब शोधपूर्ण लेख भी शामिल हैं। डॉ. भारतीय जी की साहित्य साधना करीब एक लाख पृष्ठों से अधिक हैं और 50 से अधिक वर्षो का साधना और तप का परिणाम है।

-डॉ. विवेक आर्य

मुम्बई में आदर्श जीवन निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्त्वावधान में आर्य वीर दल मुम्बई द्वारा आयोजित आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर 2 से 10 मई 2015 तक आर्य समाज मुलुण्ड कालोनी मुलुण्ड(प.) के प्रांगण में आवासीय शिविर आयोजित किया गया।शिविराध्यक्ष श्री भूपेश गुप्ता महामंत्री आर्य समाज मुलुण्ड ने ध्वजा रोहण किया। शिविर में शारीरिक पाठ्यक्रम का संचालन श्री धर्मवीर आर्य कुरुक्षेत्र हरियाणा एवं संतोष राजभर मुम्बई ने किया।आर्य वीर दल मुम्बई के संचालक पं. नरेन्द्र शास्त्री तथा महामंत्री पं. धर्मवीर आर्य के नेतृत्व एवं श्री कल्पेश आर्य व ज्ञानप्रकाश आर्य तथा श्री नरेश शास्त्री के अथक पुरुषार्थ से सम्पन्न हुआ।

पृष्ठ 3 का शेष **उत्तम गुणों...**

और सदैव सबका कल्याण ही करता है, वही लोकप्रियता प्राप्त करता है, वह ही धार्मिक है, वह ही ईश्वर भक्त है।

महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज के सातवें नियम में कहा है कि सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथा योग्य व्यवहार करना चाहिये। अत: संसार के इतिहास में सच्ची लोकप्रियता उन्हीं को मिली जो सांसारिक ऐषणाओं से ऊपर उठकर अपने जीवन को कठिनाइयों में डालकर,मानव मात्र के कल्याण के लिये जिये तथा अपने को बलिदान भी कर दिया।

आइये! आर्य समाज जैसे सर्वोच्च आध्यात्म, सामाजिक सुधार, संगठन को और मजबूत करने व जन-जन तक पहुंचाने में हम अपनी-अपनी आत्मा का अवलोकन करें और महर्षि दयानन्द के पदचिन्हों पर चल कर सच्ची लोकप्रियता प्राप्त करें अर्थात्

वर्ष वनुष्वापि गच्छ देवान: (अर्थवे) अर्थात् उत्तम परोपकारी कर्म करो और देवता बन जाओ।

- पं. उम्मेद सिंह, विशारद

आर्य समाज, अलवर के तत्त्वावधान में 68वां निःशुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर सम्पन्न

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर के तत्वावधान में 68वां नि:शुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर स्वतन्त्रता सेनानी श्री छोटू सिंह आर्य धर्मार्थ अस्पताल में दिनांक 12 जुलाई 2015 को लगाया गया। मुख्य अतिथि श्री निरंजन लाल डाटा ने शिविर का विधिवत् उद्घाटन किया। -प्रदीप आर्य, प्रधान

उपनिषदों में वर्णित भक्ति

संसार में ऐसा कोई प्राणी नहीं जो किसी न किसी प्रकार से दु:खी न हो, शास्त्रों के अनुसार प्रत्येक प्राणी तीन प्रकार के दु:खों से दु:खी है। उन दु:खों से कैसे छुटकारा मिले इसके लिए भारतीय मनीषियों ने अनेक उपाय बताये हैं जैसे व्यक्ति स्वयं को परमपिता परमात्मा की वात्सल्यमयी गोदमें अर्पित कर देना, उनके श्री चरणों का आश्रय प्राप्त करना, उन्हीं से प्रीति करना, उन्हीं को स्मरण करना, उन्हीं में श्रद्धा भाव पैदा करना, क्योंकि 'यस्य छायामृतं यस्य मृत्यु:' यजुर्वेद अर्थात् परमपिता परमात्मा रूपी ब्रह्म से साक्षात्कार करके ही मृत्यु आदि दु:खों से मुक्ति मिल सकती है, अन्यथा नहीं। उस परब्रह्म का शरणागमन ही सुखमय मोक्षपद की प्राप्ति का साधन है और उससे अलगाव ही दु:खकारक , मृत्यु का कारण है। इसीलिए परब्रह्म को जानने,पहचानने एवं प्राप्त करने के लिए भारतीय ऋषियों-मनीषियों ने संयम से तप कर आत्मा-परमात्मा के रहस्यात्मक ज्ञान को अर्जित किया। परमद्रष्टा ऋषियों ने इस रहस्यात्मक ज्ञान का सर्वप्रथम विश्व को उपदेश दिया और इस तरह भारत आध्यात्मिक क्षेत्र में विश्वगुरु की भूमिका में प्रतिष्ठित हुआ। वेद उसी रहस्यात्मक ज्ञान के संवाहक हैं। वैदिक साहित्य से नि:सृत उपनिषदों का यही लक्ष्य रहा है कि मनुष्य को शाश्वत् सुख अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति हो। परम सत्य-प्रकाश रूप, परम ज्ञान, आनन्द स्वरूप, परम पुरुष दयालु परमात्मा से मनुष्य का सम्बन्ध स्थापित हो और उसे अपने सात्विक रूप का ज्ञान हो। 'उपनिषद्' शब्द का यौगिकार्थ भी इसी बात की पुष्टि करता है। इसी दिशा में निम्नलिखित भाव देखे जा सकते हैं। स्वामी सत्यानन्द जी महाराज एक स्थान पर अपने भाव प्रकट करते हुए लिखते हैं कि-

उपनिषद का अर्थ यही, होना ईश समीप। बैठना ईश ध्यान में, विवेक सुदीप।।

सार मर्म का कथन जो, वेद भेद जो सार। ब्राह्म भेद रहस्य जो, अर्थ यही मन धार।।

परमपिता परमात्मा के प्रति यह प्रीति, प्रेम एवं श्रद्धा ही भक्ति का पर्याय है और भक्त इसे नवधा रूपों अर्थात् श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद सेवा, अर्चना, वंदना, दास्य सख्य और आत्म-निवेदन में क्रियान्वित करता है। सतत परहित कर्मों में तत्पर रहना, प्रभु के प्रति प्रीति, निष्काम कर्म भावना, ज्ञानार्जन एवं नाम स्मरण भक्ति के विभिन्न आयाम हैं। उपनिषद् में वर्णित भक्ति कर्मोपासना की क्रमबद्ध श्रृंखला है। उपनिषदों का मुख्य प्रयोजन ब्रह्म-स्वरूप का बोध करवा कर मानव को सांसारिक अटूट दु:खों से मुक्त करके मोक्षपद पर आसीन करना है। स्वामी सत्यानंद जी द्वारा भाषित एकादशोपनिषद् में भाषित ईशावास्योपनिषद् का आरम्भ ही परमपिता परमात्मा के साथ हमारा सम्बन्ध जोड़ता हुआ साधक की अग्निवत् उठी जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए कहता है कि '**पूर्णमिदं**' - अर्थात् आत्मा पूर्ण है, '**पूर्णात्पूर्णमुदच्यते**' पूर्ण परमात्मा से पूर्ण अर्थात् जगत् उत्पन्न हुआ है, '**पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते**' पूर्ण का पूर्ण लेकर भी पूर्ण ही रह जाता है।

ईशावास्योपनिषद् का प्रथम मंत्र '**ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्**' अर्थात् यह सब जो भी त्रिलोकमें जगत् है, वह सब ईश्वर के बसने योग्य है अर्थात् इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में परमपिता परमात्मा अपनी सम्पूर्ण शक्तियों से विद्यमान है और सब ओर से हमें देख रहा है।'सर्वत्र विद्यमान, दीप्तिमान्, माया रहित, वर्ण रहित, शुद्ध, पावन, निर्दोष, सर्वज्ञ, परमात्मा ने निरंतर वर्षो तक जीवित रहने के लिए पर्याप्त पदार्थो का सृजन किया।1

इस व्यापक अंतर्यामी को इस प्रकार जानकर भक्त को कोई भी दुराचरण नहीं करना चाहिए। उस परम व्यापक ईश्वर का नाम-स्मरण करते हुए त्याग की भावना से इसका भोग करना चाहिए। '**तेन त्यक्तेन भुंजीथा**' किसी के अधिकार का हनन न करते हुए इस सम्पूर्ण ऐश्वर्य को आसक्ति रहित होकर ही भोगना चाहिए। 'भगवान् की सृष्टि समझ कर, उसके पदार्थ समझ कर उसका उपभोग करो। परमेश्वर की सब वस्तुयें हैं, ऐसा मनन करना बड़ा त्याग है।[2] मोक्षपिपासु भक्त को यह संसार आसक्तिहीन हो कर भोगना चाहिए। संग्रहशील होने से बचना चाहिए। उपनिषदाधारित गीता में भी भगवान् श्री कृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए यही कहते हैं कि हे अर्जुन! तू प्राप्त पदार्थों को सम्भालने के बखेड़े से बच। संग्रहशील होना स्वयं के लिए विषाद के रास्तों पर रखा गया प्रथम कदम है, क्योंकि पहले तो मनुष्य वस्तुओंको इकट्ठा करने के लिए भागता-दौड़ता है, फिर संभालने हेतु संग्रह कक्षों का निर्माण करता है और तत्पश्चात् रात दिन उनके चोरी हो जाने के भय ये चिंतामग्न रहता है। यह चिंता ही मानव को चिता की ओर खींचती है। अवधूतगीता[3] में भी कुछ इसी प्रकार का उल्लेख मिलता है वहां कहा गया है कि रस, रक्त, मांस, मेद, चर्बी, हड्डी, मज्जा, शुक्र धातुओं से बंधा हुआ शरीर भी चिंता करने से नष्ट हो जाता है, क्योंकि चिंता के कारण चित्त के नष्ट होने पर सभी धातुएं नाश को प्राप्त हो जाती हैं, अत: चित्त की सब प्रकार से रक्षा करनी चाहिए, स्वस्थ चित्त में ही विवेक बुद्धि उत्पन्न होती है।[4]

चिंता करते-करते प्राप्त अस्वस्थता के कारण अपनी जमा पूंजी चिकित्सकों को देते-देते वह अंत में चिता तक पहुंच जाता है। पछताने के सिवा कुछ भी हाथ नहीं आता। भाव यह है कि जिस सम्पत्ति के लिए हम अपने भाई-बन्धुओं को भूल जाते हैं, उनके साथ प्रेम को भूल कर शत्रुता बांध लेते हैं, वह धन सम्पत्ति अंत में हमारे काम नहीं आती। वह न तो हमारे साथ जाती है और न ही अमृतपद पाने में सहायक ही होती है। बृहदारण्यकोपनिषद् में याज्ञवल्क्य जी जब संन्यास की इच्छा से गृह त्याग कर जाते समय मैत्रेयी से उसकी सम्पत्ति का भाग उसे देने की बात करते हैं तब मैत्रेयी और याज्ञवल्क्य जी का संवाद बड़ा ही मर्मस्पर्शी है। वहां मैत्रेयी एक बात कहती है कि - जिस धनादि की प्राप्ति से मैं मुक्त नहीं होऊंगी उस धन का मैं क्या करूं, उससे मुझे कुछ भी प्रयोजन नहीं। इस कारण मोक्ष का जो उपाय भगवान् आप जानते हैं, वह ही उपाय मुझे कहो।

इसीलिए आनन्दवाहक उपनिषद् अपने भक्त के लिए याज्ञवल्क्य जी के माध्यम से मोक्ष पिपासु मैत्रेयी को सांसारिक पदार्थों के भोग का चलन समझाते हुए कहते हैं कि न धन से मोक्ष प्राप्ति की आशा है और न ही सम्पत्ति से परमपद् प्राप्त होता है।[5]

इसी प्रकार कहते हैं कि 'इस लोक में सौ वर्षों तक नित्य नैमित्तिक कर्मो को करते हुए ही जीने की इच्छा करें-ब्रह्मज्ञानी, तत्त्वेत्ता कर्त्तव्य कर्मो का त्याग कदापि न करें। इस प्रकार कर्त्तव्य-कर्मपरायण, तुझे कर्मयोग-युक्त पुरुष में कर्म-संस्कार का लेप नहीं लगता। इससे कर्मयोग से, भिन्न दूसरा, निर्बन्ध का मार्ग नहीं हैं। मुक्ति का एकमात्र मार्ग, आस्तिक भाव सहित कर्मयोग है। विश्व में भगवान् को बसा हुआ जानने से, शुभ कर्मो को करना, ईश्वर के चलाये चक्र को सुचालित रखने में योग देना है। यही एक भक्त की भगवान् के प्रति सच्ची भक्ति है।

जिस प्रकार अनेक सम्बन्धों में बंधा होने पर, अनेकों स्थानों पर विचरण करने पर भी मनुष्य का एक निश्चित ठौर-ठिकाना होता है, उसका रहने का एक निश्चित स्थान होता है। उसी प्रकार संसार के कण-कण में विराजमान होने के साथ-साथ भगवान् का भी एक निश्चित निवास स्थान है और वह प्रियवर स्थान है- उसके अपने प्रियवर प्राणी का हृदय-स्थान। वह परमात्मा इस हृदय-स्थान पर विराजमान है। इसीलिए योगी पुरुष उसको अपनी आत्मा में ही साक्षात्कार करते हैं। अपने हृदय में अपने परमप्रिय प्रभु को अनुभूत कर मीरा भी गा उठी थीं 'मेरो प्रियतम मेरो हिवड़ो बसता' और कबीर जी भी बोलते हैं 'पिया मिला मोरे मेरे घर में' और एक शायर का कथन है 'दिन में तस्वीरे यार, गर्दन झुकाई और देख ली'। हृदय में स्थापित होने पर भी अपने भीतर की मलिनता, कुटिलता, असंयमता एवं चंचलता के कारण ब्रह्म का साक्षात्कार नहीं होता।[6] श्री स्वामी सत्यानन्द महाराज उपनिषदों के सम्पूर्ण भक्तिमय भावों का सारांश बताते हुए कहते हैं कि -

राम जाप रवि तेज समान, महा मोह तम हरे अज्ञान।

राम जाप दे आनन्द महान, मिले उसे जिसे दे भगवान्।।67।।

भक्तिभाव से भक्त सुजान, भजते राम कृपा का निधान।

राम कृपा उस जन में आवे, जिसमें आप ही राम बसावे।।73।।

उपनिषदों में पाया जाता है कि उस परमब्रह्म को अन्य किसी प्रकार नहीं पाया जाता पर एकमात्र भावना पूर्वक प्रीति से ही प्राप्त होता है। श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज कृत अमृतवाणी भी इसी तथ्य को स्वर प्रदान करते हुए कहती है-

कृपा प्रसाद है राम की देनी, काल व्याल जंजाल हर लेनी।

कृपा प्रसाद सुधा सुख स्वाद, राम नाम दे रहित विवाद।।74।।

तैत्तिरीयोपनिषद् में परमपिता परमात्मा की कृपा का पात्र बनकर आह्लादित हुआ भक्त करबद्ध हो परमात्मा से प्रार्थना करता हुआ कहता है-वह भगवान् अमृत से प्रकाशित है। वह ईश्वर मुझे बुद्धि से प्रबल बनावे। हे देव! तेरी दया से मैं अमृत मोक्ष को धारण करने वाला होऊं। मेरा शरीर राग रहित हो। मेरी जीभ तथा वाणी परम मीठी हो, कानों से मैं बहुत सुनूं। हे भगवन्! तू मेधा से आच्छादित ज्ञान

...शेष पेज 7 पर

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण

(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36-16	मुदित मूल्य 50 रु. प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36-16	मुदित मूल्य 80 रु. प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30-8	मुदित मूल्य 150 रु.	प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य समाज न कोई पंथ है न संस्था यह जीवन का यथार्थ सत्य है

किसी भी व्यक्ति, धर्म संस्था के विषय में आधा अधूरा ज्ञान वैसे ही होता है जैसे आधे-अधूरे ज्ञान वाला डॉक्टर इसीलिये कहावत कही गयी है कि नीम-हकीम खतरे जान। ठीक यही बात आर्य समाज के लिए भी है, अक्सर लोग आर्य समाज के विषय में न जाने क्या-क्या कहते रहते हैं, कोई कहता है आर्य समाज एक पंथ है तो कोई कहता है यह एक संप्रदाय है। यह एक अलग ही धर्म है यानी जितने मुंह उतनी बातें। लेकिन वास्तव में आर्य समाज है क्या? वैसे तो यह विषय बड़ा गम्भीर व बहुत वृहत् है लेकिन ज्ञान वर्धन के लिए आइए इस विषय पर संक्षिप्त में प्रकाश डालते हैं

-सम्पादक

किसी भी इंसान या संस्था के बारे में यदि कोई कुछ गलत धारणा रखता है तो उसे समझाने के लिए आवश्यक है कि हमें खुद उसके विषय में पूर्ण ज्ञान हो यदि पूर्ण न भी हो तो इतना ज्ञान तो अवश्य ही हो जिससे उसकी सत्यता को परखा जा सके और गलत धारणा वाले व्यक्ति को इतना ज्ञान अवश्य दिया जा सके जिससे वह पुन: किसी भी धर्म, संप्रदाय, इंसान व संस्था के प्रति गलत बयानी न कर सके।

-आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द ने वर्ष 1875 ई. में मुंबई के कांकडवाड़ी गांव में की थी। महर्षि दयानन्द का मकसद वैदिक धर्म से पृथक कोई अन्य पंथ या संस्था बनाने का नहीं अपितु वैदिक धर्म के अंदर व्याप्त कुरीतियों को दूर करना था। साथ ही एक मकसद और था वह था वैदिक ज्ञान को जन सामान्य तक पहुंचाना और वेदोक्त शिक्षा का प्रसार करना।

-महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने पूर्ण स्वराज की मांग की थी।

-महर्षि दयानन्द एक मात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने सिंह गर्जना से कहा था कि ''कोई कितना भी करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वही सर्वोपरि उत्तम होता है। इसी वजह से नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था, 'स्वराज्य मंदिर में पहली मूर्ति दयानन्द की ही स्थापित की जाएगी।' एनीबेसेंट ने भी इसी तथ्य को रेखांकित करते हुए कहा था,'जब स्वराज्य मंदिर बनेगा तो उसमें बड़े-बड़े नेताओं की मूर्तियां होंगी और उनमें सबसे ऊंची मूर्ति दयानन्द की होगी।'

– महर्षि दयानन्द ही ने लगभग डेढ सौ वर्ष पूर्व के मृतप्राय भारत में चेतना और बौद्धिकता के प्राण फूंके थे।

– महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने पशु व गौ हत्या रोकने के लिए आवाज उठाई और गौ माता की उपयोगिता को पूरी दुनिया को बताया। इतना ही नहीं उन्होंने गौ माता की रक्षा के लिए 'गोकरुणानिधि' नामक पुस्तक लिखी।

– महर्षि दयानन्द ने महिलाओं व शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया इससे पहले शूद्रों व महिलाओं को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था।

– महर्षि दयानन्द के पहले यह कहा जाता था कि वेद अब उपलब्ध ही नहीं हैं क्योंकि वेदों को असुर पाताल लोक ले गये। महर्षि ने ही वेदों को जन-जन तक पहुंचाया।

– महर्षि दयानन्द के उपदेशों से प्रभावित होकर देवबंद मदरसे के संस्थापक मौलवी मोहम्मद कासिम ने देवबंद मदरसे के पाठ्यक्रम में संस्कृत भाषा को शामिल किया था।

– आजादी की लड़ाई में अपना बलिदान देने वालों में 75 प्रतिशत भाग आर्य समाज से जुड़े लोगों का था।

– हैदराबाद के निजाम की ईट से ईट बजाने वाले सत्याग्रही आर्य समाजी ही थे। इन्हीं सत्याग्रहियों की बदौलत निजाम की रियासत को आजादी मिली थी।

– महर्षि दयानन्द ने प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का समर्थन ही नहीं किया वरन् देश में अनेकों गुरुकुलों की स्थापना भी की। गुरुकुल कलवा से ही स्वामी रामदेव जैसा योगी का प्रादुर्भाव हुआ।

– महर्षि दयानन्द ने ही अस्पृश्यता (छुआछूत), बाल विवाह, विधवा विवाह, बेमेल विवाह जैसी कुरीतियों को समाप्त किया और सबको समान अधिकार दिलाये।

– महर्षि दयानन्द ने ही बलि प्रथा व सती प्रथा का विरोध किया।

और भी अनेकों ऐसे कार्य हैं जिनके लिये सम्पूर्ण हिन्दू समाज व सम्पूर्ण राष्ट्र अपने निर्माण व प्रगति के लिये आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द को याद करता है और कहता है यदि महर्षि दयानन्द होते तो आज ऐसा न होता।

– चौधरी अमित कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती का ऐतिहासिक उद्बोधन

1880 ई. में मेरठ आर्य समाज के उत्सव पर दिये गये अन्तिम व्याख्यान का अंश

-आर्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए मनोयोग पूर्वक पढ़ने योग्य महर्षि का अपूर्व सन्देश।

-आर्य समाज आज जिन आन्तरिक व बाह्य समस्याओं से जूझ रहा है, उन समस्याओं का समाधान महर्षि के इस उद्बोधन में बताई गयी बातों से ही सम्भव है।

-सम्पादक

''मुझे लोग कहते हैं – जो कोई आता है आप उसे ही भरती कर लेते हैं। मेरा इस विषय में स्पष्ट उत्तर है कि मैं वेद ही को सर्वोपरि मानता हूं। वेद ही ऐसी पुस्तक है कि जिसके झण्डे तले सारे आर्य आ सकते हैं। इसलिए जो मनुष्य कह दे कि मैं वेदों को मानता हूं और आर्य हूं उसे आर्य समाज में सम्मिलित कर लो। ऐसे विश्वासी को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।''

''लोग भिन्न-भेद पर अधिक दृष्टिपात करते हैं। परन्तु आप लोग परस्पर भेद-मूलक बातों की अपेक्षा मेल-मूलक बातों पर अधिक ध्यान दो। तुच्छ भेदों और विरोधों को त्याग कर मेल-जोल की बातों में मिलाप सम्पादित करो। आपस में मिलती बातों में मिल जाने से विरोध और भेद स्वयंमेव मिट जाते हैं।''

''अब आपको अपना कर्त्तव्य आप पालन करना चाहिए। अपने जीवन को ऊंचा बनाओ और अपनी आवश्यकताओं को आप पूर्ण करो। इस समय तो यह अवस्था है कि जब कोई प्रबल प्रतिपक्षी आ जाता है तो आप तार पर तार देकर, मुझे ही बुलाते हैं। किसी संशय के उत्पन्न होने पर मुझ पर ही निर्भर करते हो। जब कभी आपस में परस्पर की फूट, फूट निकलती है, वैमनस्य बढ़ जाता है, अनबन बढ़ने लगती है और वैर-विरोध उत्पन्न हो जाता है, तो उसे मिटाने की चिन्ता मुझे ही करनी पड़ती है। मैं ही आकर आप में शान्ति स्थापना करता हूं। आपके अन्त:करणों में अवनतिकारी अन्तर नहीं पड़ने देता। आपके पारस्परिक स्नेह के सुकोमल सूत्र को छीजने नहीं देता।''

''परन्तु महाशयो! मैं कोई सदा नहीं बना रहूंगा। विधाता के नियम-न्याय में मेरा शरीर भी क्षणभंगुर है। काल अपने कराल पेट में सबको पचा डालता है।

अन्त में इस देह के कच्चे घड़े को भी उसके हाथों टूटना है।''

''सोचो, यदि अपने पांव पर खड़ा होना नहीं सिखोगे तो मेरे आंख मीचने के पीछे क्या करोगे। अभी से अपने को सुसज्जित कर लो। स्वावलम्बन के सिद्धान्त का अवलम्बन करो। अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के योग्य बन जाओ। किसी दूसरे के सहारे की अपेक्षा अपने ही पर निर्भर करो।''''मुझे विश्वास है कि आप में ऐसे अनेक सज्जन उत्पन्न होंगे जो उत्तमोत्तम कार्य कर दिखायेंगे। प्राणपण से अपने पवित्र प्रणों को पालना करेंगे। आर्य समाज का बड़ा विस्तार हो जायेगा। कालान्तर में ये वाटिकायें हरीभरी, फूली-फली और लहलहाती दिखाई देंगी। ईश्वर कृपा से वह सब कुछ होगा, परन्तु मैं नहीं देख सकूंगा।''

(सन्दर्भ ग्रन्थ: 'श्रीमद्दयानन्द प्रकाश', पृष्ट 372-373, लेखक, स्वामी सत्यानन्द प्रकाशक – सार्वदेशिक सभा)

संकलक – भावेश मेरजा

पृष्ठ 6 का शेष **उपनिषदों में...**

का कोष है। मेरे सुने हुए ज्ञान की रक्षा करे।7 हे भगवान्! वह भक्तवत्सल तू मुझ में प्रवेश कर मुझ में प्रकट हो। हे भगवान्! उस सहस्र शाखा वाले अनन्त सामर्थ्य वाले तुझ में प्रविष्ट होकर मैं शुद्ध हो जाऊं। तेरी उपासना से मैं पवित्र बनूं। आत्मा को तथा इच्छा शक्ति को ऐसे उद्बोधनों से बली बनायें।[8] हे जगत् के रचयिता! मेरे पास सब ओर से ब्रह्मचारी आयें। तू मेरे ईश्वर! विश्राम स्थान है। मुझे विद्या से चमका दे। मुझे स्व-शरण में ले ले। यह एक उत्तम प्रार्थना है।[9]

अत: सम्पूर्ण उपनिषद्-साहित्य उस अज्ञात ब्रह्म की भक्ति से ओत-प्रोत होने से भक्ति महानता का महाकुंभ, भक्ति, शक्ति, मुक्ति का त्रिवेणी संगम, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का चतुर्भुज, स्तुति, उपासना, प्रार्थना का त्रिकोण, एकादश इंद्रियों का वशीकरण मंत्र, गंध, रस, स्पर्श और शब्द का पंचांग, वासनाओं की पतझड़ के बाद हरा भरा, सुगंधित एवं खिला हुआ बसंत है।

साभार :विश्वज्योति, होश्यारपुर

संदर्भ : 1. स्वामी सत्यानंद जी द्वारा भाषित एकादशोपनिषद्,पृ.2.,
2. स्वामी सत्यानंद जी महाराज द्वारा प्रवचनित प्रवचनों का संग्रह, पृ 210,
3. अवधूत गीता, आठवां अध्याय, श्लोक 27
4. गीता संग्रह, गीता प्रेस गोरखपुर,अवधूत गीता 1, आठवां अध्याय, श्लोक 27 पृ. 618
5. बृहदारण्यकोपनिषद्, अध्याय 2, ब्राह्मण 4, मंत्र 5
6. कठोपनिषद् दूसरी वल्ली, 24
7. तै.उ. 4/1,
8. तै.उ. 4/3,
9. तै.उ. 4/4.

-डॉ मोनिका नरेश, दयानन्द स्नाकोत्तर महाविद्यालय, हिसार

साप्ताहिक आर्य सन्देश

13 जुलाई से 19 जुलाई, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 16 जुलाई/17 जुलाई, 2015
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 15 जुलाई, 2015

आर्यसमाज की मिसकॉल सेवा आरम्भ 9211990990

अपने मोबाइल से मिस कॉल दें और पाए निःशुल्क जानकारी

एस.एम.एस. से जानकारी चाहने वाले सज्जन इस नम्बर पर मिसकॉल करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज के प्रचार हेतु मिसकॉल सेवा आरम्भ की गई। आप इस सेवा का लाभ उठाएं। यदि आप दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा आर्यसमाज से संबंधित किसी भी प्रकार की कोई जानकारी-सूचना प्राप्त करना चाहते हो तो 09211990990 पर मिसकॉल करें। आपके द्वारा कॉल करते ही कॉल कट जाएगी और आपको **धन्यवाद** संदेश प्राप्त होगा तथा आपका मो. नं. एस.एम.एस. सूची में अंकित हो जाएगा। **-महामंत्री**

प्रतिष्ठा में,

चुनाव समाचार

आर्य समाज गोविन्दपुरी, कालकाजी नई दिल्ली

प्रधान -**श्री सोमदेव मल्होत्रा**
मंत्री -**श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता**
कोषाध्यक्ष -**श्री सत्येन्द्र मिश्र**

आर्य समाज (गुरुकुल) अशोक विहार, फेस-2, दिल्ली

प्रधान - **श्री सत्यपाल गाँधी**
मंत्री - **श्री नन्द किशोर मल्होत्रा**

आर्य समाज नोएडा, वेद गोष्ठी दिनांक 21.22 व 23 अगस्त 2015 को

आर्ष गुरुकुल बी-69 सै.33 नोएडा एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में श्रावणी के उपलक्ष में दिनांक 21.22 व 23 अगस्त 2015 को वेद-गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान सर्वश्री डॉ. वेद पाल, डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार डॉ. राजकिशोर शास्त्री भाग ले रहे हैं। माननीय योगानन्द शास्त्री एवं स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता होंगे।

- आर्य कै. अशोक गुलाटी, मो. 09871798221

बच्चों के ज्ञान विकास के लिए अमूल्य भेंट

बाल (लघु) सत्यार्थ प्रकाश

मूल्य मात्र 10 रुपये प्रति

निःशुल्क वितरण हेतु 1000 प्रति लेने पर 20% की विशेष छूट

-: प्राप्ति स्थान :-

वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
-श्री विजय आर्य
फोन : 011-23360150, 09540040339

अन्तर्विद्यालयीय प्रतियोगिताओं का आयोजन

एकांकी प्रतियोगिता	17/07/2015 (शुक्रवार)	बिड़ला आर्य कन्या सी.से. स्कूल बिड़ला लाईस, दिल्ली-110007
मंत्र लेखन प्रतियोगिता	22/07/2015 (बुधवार)	महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, शादीपुर खामपुर दिल्ली-110008
समूह गान प्रतियोगिता	28/07/2015 (मंगलवार)	महाशय धर्मपाल विद्या मंदिर सुभाष नगर, दिल्ली

सभी आर्य विद्यालयों के अधिकारियों से अनुरोध है कि अधिक से अधिक विद्यार्थियों को इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

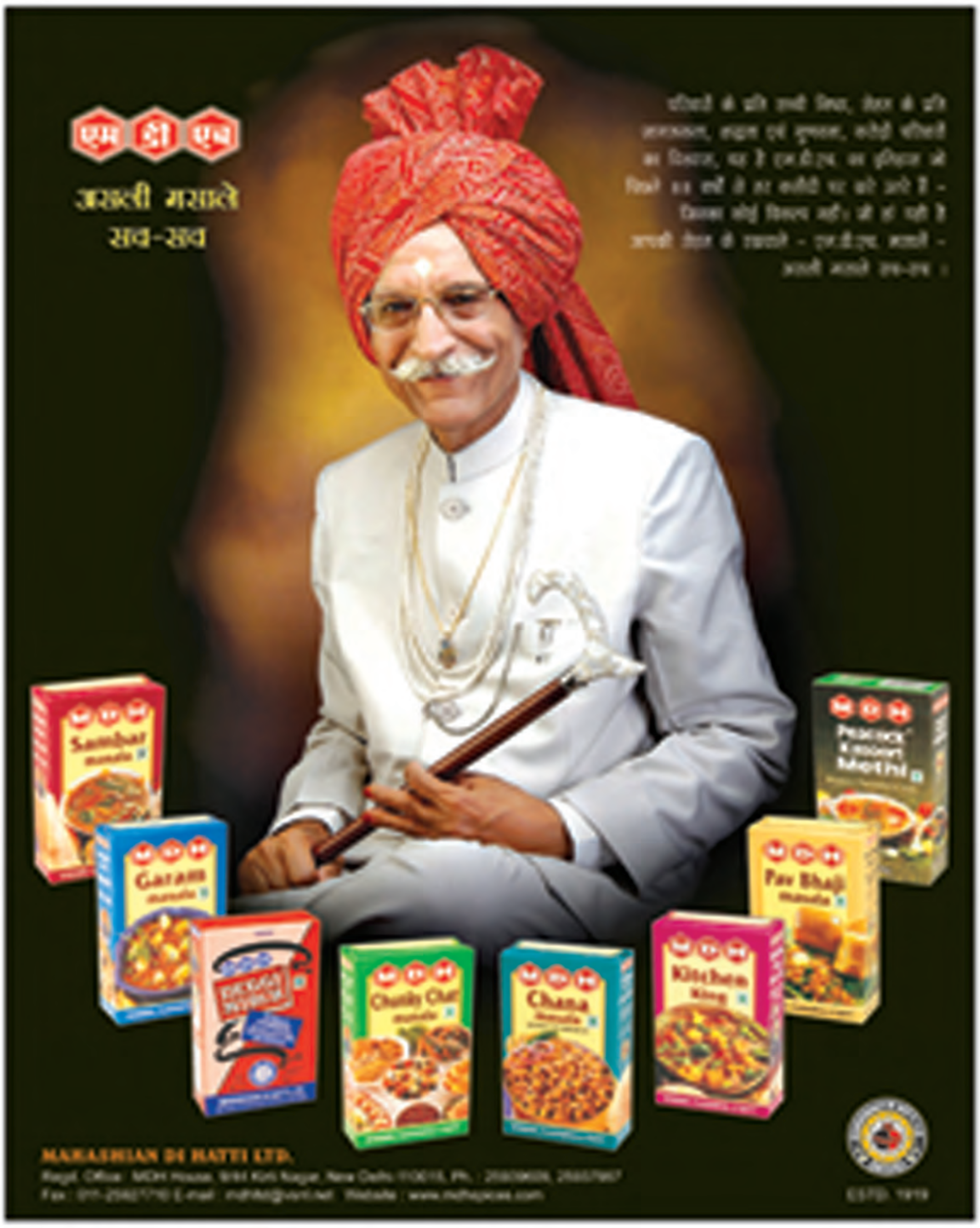

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, टैलीफैक्स : 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह